Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा मुर्दहिया में सामाजिक समस्याओं की प्रासंगिकता : वर्तमान परिदृश्य के संदर्भ में अध्ययन

निधी सिंह* डॉ. विनय कुमार सोनवानी**

* शोधार्थी (हिन्दी) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत
** सह प्राध्यापक (हिन्दी) PMCOE शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुढ़ार, शहडोल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – हिन्दी दलित साहित्य में आत्मकथा लेखन ने दलित समाज के अनुभवों, संघर्षों और सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की है। डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा मुर्दहिया इस परंपरा की एक महत्वपूर्ण कृति है। यह आत्मकथा केवल एक व्यक्ति के जीवन-संघर्ष का दस्तावेज नहीं है, बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत विषमता, आर्थिक अभाव, अशिक्षा, सामाजिक बहिष्करण, लैंगिक असमानता तथा अंधविश्वास जैसी समस्याओं का यथार्थ चित्रण भी है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मुर्दहिया में वर्णित सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करते हुए उनकी वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संविधान द्वारा समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना के बावजूद अनेक सामाजिक समस्याएँ आज भी विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। इस दृष्टि से मुर्दहिया समकालीन समाज को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

शब्द कुंजी – मुर्दहिया, तुलसीराम, दलित साहित्य, सामाजिक समस्याएँ, जातिवाद, शिक्षा, सामाजिक न्याय, समकालीन समाज।

प्रस्तावना – हिन्दी साहित्य में आत्मकथा एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन के अनुभवों को सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करता है। दलित आत्मकथाएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे समाज के उस वर्ग की आवाज को सामने लाती हैं जिसे सदियों तक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से हाशिए पर रखा गया। डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा मुर्दहिया इसी परंपरा की एक सशक्त कृति है।

मुर्दहिया शब्द स्वयं दलित जीवन की त्रासदी और सामाजिक स्थिति का प्रतीक है। यह आत्मकथा लेखक के बचपन, परिवार, गाँव और सामाजिक परिवेश का ऐसा चित्र प्रस्तुत करती है जिसमें जातिगत भेदभाव, गरीबी, भूख, अपमान और संघर्ष जीवन की सामान्य स्थितियाँ हैं। लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से भारतीय समाज की गहरी सामाजिक संरचनाओं को उजागर किया है।

यह कृति दलित अनुभवों, सामाजिक बहिष्करण और शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्माण की प्रक्रिया को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। समकालीन शोध भी यह स्वीकार करते हैं कि मुर्दहिया जातिगत भेदभाव, सामाजिक बहिष्करण और संरचनात्मक असमानताओं को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

शोध का उद्देश्य:

1. मुर्दहिया में चित्रित प्रमुख सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।
2. इन समस्याओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण करना।
3. वर्तमान भारतीय समाज में उनकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
4. सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय के संदर्भ में आत्मकथा के योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति – यह शोध गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए मुर्दहिया को प्राथमिक स्रोत तथा दलित साहित्य, सामाजिक न्याय, जाति-व्यवस्था और समकालीन सामाजिक अध्ययनों को द्वितीयक स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है।

मुर्दहिया में सामाजिक समस्याओं का चित्रण

1. जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता– भारतीय समाज की सबसे जटिल समस्या जाति-व्यवस्था रही है। मुर्दहिया में लेखक ने बचपन से ही जातिगत अपमान और सामाजिक बहिष्कार का अनुभव किया है। दलित समुदाय को सार्वजनिक संसाधनों, धार्मिक स्थलों और सामाजिक गतिविधियों से दूर रखा जाता था।

विद्यालयों में दलित छात्रों के साथ अलग व्यवहार, पानी पीने की अलग व्यवस्था और सामाजिक दूरी का पालन अस्पृश्यता की गहरी जड़ों को दर्शाता है। लेखक का अनुभव केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि पूरे दलित समुदाय की सामूहिक पीड़ा का प्रतिनिधित्व करता है।

आज भी जातिगत भेदभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। विभिन्न सामाजिक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन में जाति आधारित असमानताएँ अनेक रूपों में मौजूद हैं।

2. आर्थिक विषमता और गरीबी– मुर्दहिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष आर्थिक अभाव का चित्रण है। लेखक के परिवार को भोजन, वस्त्र और आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

गरीबी केवल आर्थिक समस्या नहीं बल्कि सामाजिक सम्मान और अवसरों से वंचित होने का कारण भी है। दलित समुदाय की आर्थिक स्थिति उनके सामाजिक स्थान से जुड़ी हुई थी। जाति और गरीबी का संबंध आत्मकथा में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

वर्तमान भारत में आर्थिक विकास के बावजूद सामाजिक समूहों के बीच आय और अवसरों की असमानता बनी हुई है। अनुसूचित जातियों और वंचित वर्गों में गरीबी की दर अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।

3. शिक्षा संबंधी समस्याएँ – डॉ. तुलसीराम के जीवन में शिक्षा मुक्ति

का माध्यम बनकर उभरती है। आर्थिक कठिनाइयों, सामाजिक भेदभाव और संसाधनों के अभाव के बावजूद लेखक शिक्षा प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करता है।

आत्मकथा यह स्पष्ट करती है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का उपकरण है। लेखक का जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण साधन बन सकती है।

आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच एक चुनौती बनी हुई है। डिजिटल संसाधनों, निजी शिक्षा और तकनीकी सुविधाओं तक पहुँच में सामाजिक असमानताएँ देखी जा सकती हैं।

4. भूख और कुपोषण की समस्या – आत्मकथा में कई प्रसंग ऐसे हैं जहाँ भोजन की कमी जीवन की कठोर वास्तविकता के रूप में सामने आती है। भूख केवल शारीरिक आवश्यकता नहीं बल्कि सामाजिक संरचना की विफलता का प्रतीक बन जाती है।

लेखक के अनुभव यह दर्शाते हैं कि गरीबी और भूख ने दलित समुदाय के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित किया। यह समस्या आज भी भारत के अनेक ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में देखी जा सकती है।

5. अंधविश्वास और रूढ़िवादिता – ग्रामीण समाज में अंधविश्वासों और धार्मिक रूढ़ियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। बीमारी, प्राकृतिक घटनाओं और सामाजिक समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बजाय अंधविश्वासों में खोजा जाता है।

लेखक ने ऐसे अनेक प्रसंगों का उल्लेख किया है जो यह दर्शाते हैं कि अंधविश्वास सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। आज भी शिक्षा के विस्तार के बावजूद अनेक क्षेत्रों में अंधविश्वास और अवैज्ञानिक धारणाएँ विद्यमान हैं।

6. लैंगिक असमानता – मुर्दहिया में दलित महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे जाति और लिंग दोनों स्तरों पर शोषण का सामना करती हैं।

महिलाओं को शिक्षा, स्वतंत्र निर्णय और सामाजिक सम्मान से वंचित रखा जाता है। घरेलू श्रम, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक नियंत्रण उनके जीवन को सीमित कर देते हैं।

आधुनिक समय में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, किंतु लैंगिक असमानता अभी भी एक गंभीर सामाजिक समस्या बनी हुई है। दलित महिलाओं के संदर्भ में यह समस्या और अधिक जटिल हो जाती है।

वर्तमान परिदृश्य में मुर्दहिया की प्रासंगिकता

1. सामाजिक न्याय की अवधारणा – भारतीय संविधान ने समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय को मूल अधिकारों के रूप में स्वीकार किया है। इसके बावजूद सामाजिक न्याय की स्थापना एक सतत प्रक्रिया बनी हुई है।

मुर्दहिया हमें यह समझने में सहायता करती है कि सामाजिक न्याय केवल कानूनी प्रावधानों से नहीं बल्कि सामाजिक चेतना और व्यवहार परिवर्तन से संभव है।

2. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन – आज भी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है। लेखक का जीवन इस बात का उदाहरण है कि शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर सकती है।

नई शिक्षा नीति, डिजिटल शिक्षा और उच्च शिक्षा के अवसरों के विस्तार के बावजूद सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं।

3. जाति विमर्श की समकालीन उपस्थिति – समकालीन भारत में जाति का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ है। सोशल मीडिया, विवाह, राजनीति और सामाजिक संबंधों में जातिगत पहचान आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आधुनिक तकनीक के विस्तार के साथ जातिगत पूर्वाग्रहों के नए रूप भी सामने आए हैं।

4. दलित अस्मिता और आत्मसम्मान – मुर्दहिया दलित अस्मिता के निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करती है। यह आत्मकथा आत्मसम्मान, संघर्ष और आत्मनिर्भरता का संदेश देती है।

दलित साहित्य आज सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक विमर्श का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। समकालीन अध्ययनों में भी मुर्दहिया को दलित प्रतिरोध और वैकल्पिक सामाजिक दृष्टि की महत्वपूर्ण कृति माना गया है।

मुर्दहिया और सामाजिक परिवर्तन की संभावनाएँ – यह आत्मकथा केवल समस्याओं का वर्णन नहीं करती बल्कि परिवर्तन की संभावनाओं को भी रेखांकित करती है। शिक्षा, सामाजिक चेतना, संगठन और लोकतांत्रिक मूल्यों के माध्यम से समाज में समानता और न्याय की स्थापना की जा सकती है।

लेखक का जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन संभव है।

निष्कर्ष– डॉ. तुलसीराम की मुर्दहिया हिन्दी दलित आत्मकथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है। इसमें वर्णित जातिगत भेदभाव, आर्थिक विषमता, अशिक्षा, भूख, अंधविश्वास और लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ केवल अतीत की घटनाएँ नहीं हैं बल्कि वर्तमान समाज में भी विभिन्न रूपों में मौजूद हैं।

यह आत्मकथा सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज होने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का घोषणापत्र भी है। शिक्षा, समानता, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के मूल्यों को स्थापित करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में जब समावेशी समाज और सामाजिक न्याय की चर्चा व्यापक रूप से हो रही है, तब मुर्दहिया का अध्ययन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. तुलसीराम, मुर्दहिया, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 5-183।
2. तुलसीराम, मणिकर्णिका, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2014।
3. आंबेडकर, भीमराव रामजी, जाति का विनाश, नई दिल्ली: विभिन्न संस्करण।
4. वाल्मीकि, ओमप्रकाश,जूठन, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 1997।
5. लिंबाले, शरणकुमार, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
6. ठाकुर, मणींद्र नाथ, 'ज्ञान की सामाजिक उपयोगिता और 'मुर्दहिया'।' प्रतिमान, खंड 1, अंक 1, 2013, पृ. 52-72।
7. सावंत, एस., 'तुलसीराम की 'मुर्दहिया' में चित्रित दलित विमर्श।' Golden Research Thoughts, खंड 1, अंक VII, जनवरी 2012, पृ. 1-4।